ikB

4 हॉकी का जादूगर

हॉकी का मैदान। ध्यानचंद सेंटर फारवर्ड जगह पर खेल रहे थे। इस स्थान पर खेलने वाला खिलाड़ी अग्रिम पंक्ति का मध्य व प्रमुख होता है। सबकी नजर गोल पोस्ट पर थी। गोल करने के लिए ध्यानचंद बिजली की गति से आगे बढ़े। उन्होंने जोरदार स्कूप किया। गेंद उठाने की इस कला में उनका जवाब न था लेकिन यह क्या, गोल न हुआ। गेंद गोलपोस्ट के ऊपर से होती हुई बाहर निकल गई। आश्चर्य कि गोल न हुआ। गोलकीपर, दूसरे खिलाड़ी व दर्शक सब अचंभित रह गए। ध्यानचंद के चेहरे पर अफसोस के भाव थे, लेकिन वे मैच खेलते रहे। उन्हें शक हुआ कि गोलपोस्ट की ऊँचाई में कोई गलती है। मैच के बाद उनके आग्रह पर गोलपोस्ट नापा गया। उसकी ऊँचाई तीन इंच कम पाई गई। गोल न होने का राज़ खुल गया।

ध्यानचंद ने सेंटर फारवर्ड के रूप में खेलते हुए अपने खेल जीवन में एक हजार गोल किए, जो कि विश्व रिकॉर्ड है। हॉकी के इस खिलाड़ी का जन्म इलाहाबाद (प्रयाग) में 29 अगस्त 1905 को हुआ था। इनके पिता का नाम सोमेश्वर दत्त सिंह और माता का नाम श्यामा देवी था। पत्नी का नाम जानकी देवी था।

मात्र 16 वर्ष की उम्र में ध्यानचंद को भारतीय सेना में नौकरी मिल गई। वे दिन में सेना में नौकरी करते और रात को मन लगाकर हॉकी का अभ्यास करते थे। स्टिक और बॉल के साथ उनकी कलाकारी कमाल की थी। वे विपक्षी रक्षकों के बीच गेंद को अपनी स्टिक से चिपकाए हुए मछली की तरह फिसल जाते और गोल पर गोल करते। इनके प्रारंभिक प्रशिक्षक 'सूबेदार मेजर बाले तिवारी' ने इन्हें हॉकी के कई महत्त्वपूर्ण गुर सिखाए। इनके बचपन का नाम ध्यान सिंह था, लेकिन सेना के अधिकारियों ने ही प्यार से इनका नाम ध्यानचंद रख दिया। खेल में उपलब्धियों के कारण सन 1947 के बाद मेजर के रूप में इनको पदोन्नति दी गई।

सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद की कप्तानी में भारतीय हॉकी टीम ने

जर्मनी को उसके घर में 8–1 से करारी शिकस्त देकर स्वर्ण पदक जीता। फाइनल देखने के लिए स्टेडियम में जर्मन तानाशाह 'एडोल्फ हिटलर' भी मौजूद थे। विजेता

टीम को उनके हाथों स्वर्ण पदक दिए जाने थे, लेकिन जर्मनी की हार से वे इतने गुस्से में थे कि खेल समाप्त होने से पहले ही स्टेडियम छोड़कर चले गए। अगले दिन हिटलर ने हॉकी के जादूगर ध्यानचंद से मिलने का संदेश भिजवाया। इससे वे बेहद चिंतित हो गए। उन्होंने हिटलर की तानाशाही व क्रूरता के कई किस्से सुने हुए थे। अगली सुबह जब ध्यानचंद हिटलर से मिलने पहुँचे तो जर्मन तानाशाह ने बेहद गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। बातचीत के दौरान हिटलर ने उनके सामने जर्मन फौज में बड़े पद का प्रस्ताव दिया, लेकिन हमारे दद्दा ने अपने देशप्रेम के कारण यह प्रस्ताव विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया।

ध्यानचंद खेलते समय अपने अनुशासन और धैर्य के कारण भी प्रसिद्ध थे। सन 1933 के आर्मी कप में विरोधी टीम के सेंटर हाफ खिलाड़ी ने खेल में पिछड़ने पर आपा खो दिया व ध्यानचंद के सिर पर हॉकी स्टिक दे मारी। घायल ध्यानचंद ने मैदान के बाहर जाकर घाव पर पट्टी करवाई व खेल–भावना का परिचय देते हुए पुनः मैदान में उतरे। तत्पश्चात विपक्षी टीम पर ताबड़तोड़ छह गोल करके खेल के उच्च कौशल से अपना बदला लिया।

अपने परिवार और खेल प्रेमियों के बीच ध्यानचंद 'दद्दा' के नाम से प्रसिद्ध थे। विदेशों में भी वे अत्यंत लोकप्रिय थे। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज 'डॉन ब्रेडमेन' ने एक बार कहा था–'मिस्टर ध्यानचंद.....जिस

तरह से क्रिकेट में रन बनते हैं, आप वैसे ही हॉकी में गोल करते हो।' ऑस्ट्रियाई मानते हैं कि ध्यानचंद दैवी प्रतिभा के धनी थे क्योंकि दो हाथों से इतने गोल संभव नहीं हैं। ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना के एक क्लब में ध्यानचंद की चार हाथवाली मूर्ति स्थापित की गई है, जिसमें उनके चारों हाथों में हॉकी स्टिक है। कई बार विपक्षी टीमों ने उनकी स्टिक को तोड़कर देखा कि उसमें चुंबक आदि तो नहीं लगा रखा है, जिसके कारण वे दनादन गोल करते हैं।

उनको लोग ठीक ही 'हॉकी का जादूगर' कहते हैं। सन 1932 के लॉस एंजिल्स ओलम्पिक में भारत ने अमेरिका को 24–1 से हराया, जो एक विश्व रिकॉर्ड है। उस मैच में ध्यानचंद ने 8 और उनके छोटे भाई रूपसिंह ने 10 गोल किए थे।

ओलंपिक दुनिया की सर्वश्रेष्ठ खेल प्रतियोगिता होती है। इसका आयोजन प्रति चार वर्ष बाद होता है।

सन 1956 में ध्यानचंद को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था। सन 1972 के म्यूनिख ओलंपिक में विशेष अतिथि के रूप में ध्यानचंद को आमंत्रित किया गया, लेकिन आर्थिक स्थिति सही नहीं होने की वजह से वे सम्मान प्राप्त करने नहीं पहुँच सके थे। भारत सरकार ने ध्यानचंद के सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया है। उनके जन्म दिवस 29 अगस्त को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में आयोजित किया जाता है। भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी का गौरव ध्यानचंद के परिवार ने भी खूब बढ़ाया है। उनके पुत्र अशोक कुमार ने सन 1975 के विश्व कप में गोल करके भारत को हॉकी में विश्व विजेता बनाया था।

हॉकी से संन्यास के बाद भी ध्यानचंद को विदेशों से कई अच्छे प्रस्ताव आए लेकिन उन्होंने धन के लिए देश नहीं छोड़ा। उन्होंने राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला में ही प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया।

3 दिसम्बर 1979 को दिल्ली के एक अस्पताल में हॉकी के इस जादूगर का निधन हुआ था। मेजर ध्यानचंद ने झाँसी के हीरो ग्राउंड पर हॉकी खेलना शुरू किया था। उनका अंतिम संस्कार भी इसी हीरो ग्राउंड पर हुआ था।

अभ्यास

1- vkb,] 'kCnksa dk vFkZ tkusa &

- अचंभित – हैरान
- आग्रह – निवेदन
- अग्रिम – सबसे आगे
- क्रूरता – निर्दयता
- गुर सिखाना – दाँव पेंच सिखाना
- चिंतित – परेशान
- प्रशिक्षक – प्रशिक्षण देने वाला
- राज़ – रहस्य
- विनम्रतापूर्वक – नम्र भाव से
- विपक्षी – विरोधी
- शिकस्त – हराना

2- ikB ls &

(क) ध्यानचंद के चेहरे पर अफसोस के भाव होने पर भी वे मैच खेलते रहे। इसका क्या कारण था?

____

____

(ख) ध्यानचंद की खेल भावना में अनुशासन और धैर्य की भावना कूट–कूटकर भरी थी। इसका पता कैसे चलता है?

____

____

(ग) ध्यानचंद के बचपन का क्या नाम था? उनका नाम ध्यानचंद कब पड़ा?

____

____

(घ) हिटलर खेल का मैदान छोड़कर क्यों चले गए व उन्होंने अगले दिन ध्यानचंद को क्या प्रस्ताव दिया?

_____

_____

(ङ) मेजर ध्यानचंद की चार हाथों वाली मूर्ति कहाँ स्थित है, उनकी ऐसी मूर्ति क्यों बनाई गई?

_____

_____

(च) 1932 के ओलंपिक कहाँ हुए व इसमें कौन–सा विश्व रिकार्ड बना?

_____

_____

3- vkidh ckr &

(क) जर्मन शासक एडोल्फ हिटलर ध्यानचंद के प्रदर्शन को देखकर मैदान छोड़कर चले गए। आप किसी विपक्षी खिलाड़ी के बेहतर प्रदर्शन पर क्या करते हैं?

(ख) क्या आप भी ध्यानचंद की तरह देश की सेवा करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो कैसे?

(ग) शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास को बनाए रखने के लिए हमारे जीवन में खेल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बताइए, आप कौन–कौन से खेल खेलते हैं?

4- ikB l; vkx &

(क) कौन से खेल के खिलाड़ी को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है खिलाड़ी का नाम बताएँ?

(ख) यदि गोल न होने का राज़ न खुलता तो ध्यानचंद के मन में किस प्रकार के विचार आते?

(ग) ध्यानचंद राष्ट्रीय खेल हॉकी में बेहतर प्रदर्शन कर 'हॉकी के जादूगर' कहलाए। सायना नेहवाल तथा सुशील कुमार कौन–कौन से खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर रहें हैं ?

(घ) खेल खेलते समय विरोधी टीम का खिलाड़ी आप से दुर्व्यवहार करे तो एक अच्छा खिलाड़ी होने के नाते आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे ?

5- Hkk"kk dh ckr &

xky u gksus dk jkt+ [kqy x;kA

अंग्रेजों ने भारतवर्ष पर कई वर्ष राज किया।

उपर्युक्त वाक्यों में राज़ और राज शब्द दिए गए हैं, जिनमें से राज़ का अर्थ रहस्य और राज का अर्थ शासन है। इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द दिए हैं, इनके अलग–अलग अर्थ बताकर वाक्य बनाएँ।

(क) जरा – ______________________________

ज़रा – ______________________________

(ख) नाज – ______________________________

नाज़ – ______________________________

(ग) गज – ______________________________

गज़ – ______________________________

(घ) सजा – ______________________________

सज़ा – ______________________________

'राज़ खुल जाना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है–भेद खुलना। नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं। उनके अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

- मछली की तरह फिसलना – ______________________________
- धूल चटाना – ______________________________
- अग्रिम पंक्ति में गिना जाना – ______________________________

6- ;g Hkh djs &

आपका मनपसंद खेल कौन–सा है? अपने मनपसंद खेल के बारे में कुछ वाक्य लिखें।

____

____

____

____